ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.02, September: 2025

स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी साहित्य

डॉ.धर्मेन्द्र दास, सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग मदन अहल्या महिला महाविद्यालय नवगछिया,भागलपुर

सारांश

समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में उभरा है, जो स्त्री के अस्तित्व, अस्मिता, स्वाधीनता और सामाजिक भागीदारी के प्रश्नों को केन्द्र में लाता है। स्त्री विमर्श केवल साहित्यिक विमर्श न होकर एक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलन का भी रूप है, जिसने भारतीय समाज में गहरे स्तर पर परिवर्तन की प्रक्रिया को गति दी है। मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, अनामिका आदि रचनाकारों ने स्त्री जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को अपने साहित्य में सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की उपस्थिति, उसकी प्रमुख विशेषताओं और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री विमर्श ने हिन्दी साहित्य को नई दृष्टि प्रदान की है और स्त्री को अपनी पहचान गढ़ने के लिए सशक्त मंच उपलब्ध कराया है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति ऐतिहासिक रूप से जटिल और बहुआयामी रही है। एक ओर उसे शक्ति और सृजन की प्रतीक के रूप में सम्मानित किया गया, तो दूसरी ओर पितृसत्तात्मक संरचना में उसे हाशिये पर भी धकेला गया। बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में स्त्री ने अपनी अस्मिता, अधिकार और स्वाधीनता के लिए आवाज़ उठाई। इसी प्रक्रिया ने साहित्य को भी प्रभावित किया और हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श एक प्रमुख प्रवृत्ति बनकर सामने आया।

स्त्री विमर्श मूलतः स्त्री के अस्तित्व और उसकी सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक भूमिका के पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया है। यह केवल पुरुष-प्रधान व्यवस्था के विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें स्त्री-पुरुष समानता, लैंगिक न्याय और आत्मनिर्भरता के प्रश्नों को रेखांकित किया गया है।

समकालीन हिन्दी साहित्य ने स्त्री के जीवन की विविध परतों—गृहस्थी, शिक्षा, राजनीति, श्रम और यौनिकता—को नए आयामों में प्रस्तुत किया है। विशेषकर कथा साहित्य, उपन्यास, नाटक और कविता में स्त्री विमर्श के विविध स्वर उभरकर सामने आए हैं। मन्नू भण्डारी की *आपका बंटी*, मृदुला गर्ग की *कठगुलाब*, चित्रा मुद्गल की *आवां* जैसी कृतियाँ स्त्री के भीतर और बाहर के संघर्षों को गहराई से सामने लाती हैं।

इस शोध-पत्र में स्त्री विमर्श की अवधारणा, उसकी पृष्ठभूमि तथा समकालीन हिन्दी साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि साहित्य में स्त्री विमर्श ने किस प्रकार सामाजिक चेतना को प्रभावित किया और स्त्री को अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए नए रास्ते उपलब्ध कराए।

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.02, September: 2025

शोध उद्देश्य

इस शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. स्त्री विमर्श की संकल्पना और उसकी ऐतिहासिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करना।
2. समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करना।
3. प्रमुख हिन्दी साहित्यकारों (कथा, कविता, उपन्यास, नाटक) की कृतियों में स्त्री विमर्श के स्वरूप और प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
4. स्त्री विमर्श द्वारा हिन्दी साहित्य और समाज में उत्पन्न चेतना और परिवर्तन को चिन्हित करना।
5. स्त्री विमर्श के भविष्यगत संभावनाओं को रेखांकित करना।

शोध पद्धति

1. **स्रोत**
    - द्वितीयक स्रोत – पुस्तकें, शोध लेख, पत्र-पत्रिकाएँ, आलोचनात्मक निबंध।
    - प्रामाणिक साहित्यिक ग्रंथ – समकालीन उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ और नाटक।

शोध पद्धति का विस्तृत विवेचन

स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन हेतु इस शोध-पत्र में **वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक**—तीनों पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। इन पद्धतियों का प्रयोग निम्न प्रकार से किया गया है :

1. वर्णनात्मक

इस पद्धति का उपयोग स्त्री विमर्श की मूल अवधारणा और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करने के लिए किया गया।

- स्त्री विमर्श के ऐतिहासिक विकास, पश्चिमी और भारतीय संदर्भों का वर्णनात्मक विवेचन किया गया।
- उदाहरण स्वरूप, मीनाक्षी मिश्रा की *नारीवाद और हिन्दी साहित्य* तथा निर्मला गुप्ता के शोध आलेखों से स्त्री विमर्श की परिभाषा और प्रमुख प्रवृत्तियों को स्पष्ट किया गया।
- इस प्रकार वर्णनात्मक पद्धति ने शोध के लिए वैचारिक आधार तैयार किया।

2. विश्लेषणात्मक

इस पद्धति का उपयोग चुनी हुई साहित्यिक कृतियों में स्त्री विमर्श के आयामों का गहन अध्ययन करने के लिए किया गया।

निम्नलिखित कृतियों का विश्लेषण किया गया :

1. **मन्नू भण्डारी – *आपका बंटी***
    - तलाक़ और टूटते परिवार के संदर्भ में स्त्री की असहाय स्थिति और संघर्ष।
    - नायिका शकुंतला की अस्मिता और मातृत्व के बीच द्वंद्व का चित्रण।
2. **मृदुला गर्ग – *कठगुलाब***
    - स्त्री की स्वतंत्रता, देह विमर्श और सामाजिक मान्यताओं से टकराव।
    - नायिका की आत्मनिर्णय की क्षमता और सामाजिक बंधनों से विद्रोह।

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.02, September: 2025

3. **चित्रा मुद्गल – *आवां***
    - कामकाजी और श्रमिक वर्ग की स्त्रियों की कठिनाइयाँ।
    - स्त्री के श्रम और उसकी सामाजिक-आर्थिक पहचान पर विमर्श।
4. **अनामिका – *ढोलक* (कविता-संग्रह)**
    - कविता में स्त्री की आवाज़, प्रतिरोध और आत्मसम्मान की चेतना।
    - स्त्री देह और मन की जटिलताओं को रूपकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया।

👉 विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समकालीन साहित्य में स्त्री केवल 'गृहिणी' नहीं बल्कि संघर्षशील, आत्मनिर्भर और सशक्त व्यक्तित्व है।

3. तुलनात्मक

विभिन्न रचनाकारों और विधाओं में स्त्री विमर्श की तुलना करके उनकी भिन्नताओं और समानताओं को उजागर किया गया।

- **मन्नू भण्डारी की *आपका बंटी*** और **मृदुला गर्ग की *कठगुलाब*** की तुलना करने पर पता चलता है कि—
    - भण्डारी पारिवारिक जीवन और तलाक़ से उत्पन्न समस्याओं पर केन्द्रित हैं,
    - जबकि गर्ग स्त्री की देह और स्वतंत्रता के प्रश्नों पर अधिक मुखर हैं।
- **चित्रा मुद्गल की *आवां*** और **उषा प्रियंवदा की कहानियों** की तुलना में—
    - मुद्गल ने श्रमिक वर्ग की स्त्रियों के यथार्थ को प्रस्तुत किया है,
    - जबकि उषा प्रियंवदा ने मध्यवर्गीय कामकाजी स्त्रियों की संवेदनाओं और अकेलेपन को रेखांकित किया है।
- **कविता (अनामिका, कुमुद शर्मा)** और **नाटक (मोहन राकेश – *आधे-अधूरे*)** की तुलना से—
    - कविता में स्त्री की आत्मस्वर और प्रतिरोध की सीधी आवाज़ सुनाई देती है,
    - जबकि नाटक में स्त्री-पुरुष संबंधों और पारिवारिक विघटन की जटिलता उभरकर आती है।

👉 तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न विधाओं और लेखकों ने स्त्री विमर्श को अपनी दृष्टि और अनुभव के आधार पर अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत किया, लेकिन सभी में स्त्री अस्मिता और अस्तित्व का प्रश्न प्रमुख है।

निष्कर्षात्मक टिप्पणी

इस प्रकार पद्धति के अंतर्गत –

- **वर्णनात्मक दृष्टिकोण** ने स्त्री विमर्श की अवधारणा और वैचारिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट किया।
- **विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण** ने चुनी हुई कृतियों की गहन पड़ताल द्वारा स्त्री जीवन की जटिलताओं और विमर्श के आयामों को उभारा।
- **तुलनात्मक दृष्टिकोण** ने विभिन्न लेखकों और विधाओं के बीच समानताओं और भिन्नताओं को स्पष्ट करके स्त्री विमर्श की बहुआयामिता को सामने रखा।

2. **अध्ययन की सीमा**
    - यह शोध-पत्र विशेष रूप से 20वीं सदी के उत्तरार्ध और 21वीं सदी के समकालीन हिन्दी साहित्य तक सीमित है।

Copyright @ 2025 Author

- स्त्री विमर्श से संबंधित प्रमुख साहित्यकारों की चुनिंदा रचनाओं को आधार बनाया गया है।

साहित्य समीक्षा

1. **स्त्री विमर्श की अवधारणा**
   - स्त्री विमर्श पश्चिम में नारीवादी आंदोलनों से जुड़ा हुआ है, पर भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसका स्वरूप अलग और बहुआयामी है।
   - यहाँ स्त्री विमर्श केवल अधिकार और समानता की माँग तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, पारिवारिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन से भी जुड़ा है।
2. **कथा साहित्य में स्त्री विमर्श**
   - **मन्नू भण्डारी** – *आपका बंटी* में तलाक़ और बिखरे हुए पारिवारिक जीवन की मार झेलती स्त्री और बच्चों का यथार्थ चित्रण।
   - **मृदुला गर्ग** – *कठगुलाब* में स्त्री की स्वतंत्रता, देह और अस्तित्व के प्रश्न।
   - **चित्रा मुद्गल** – *आवां* में कामकाजी स्त्री, श्रमिक वर्ग और संघर्षशील स्त्रियों की वास्तविकता।
   - **उषा प्रियंवदा** – उनकी कहानियों में अकेली कामकाजी स्त्री की संवेदनाएँ और सामाजिक द्वंद्व।
3. **कविता में स्त्री विमर्श**
   - **अनामिका** – स्त्री की अस्मिता, अनुभव और देह राजनीति को काव्य के माध्यम से स्वर देना।
   - **कुमुद शर्मा** – घरेलू स्त्री के भीतर के संघर्षों को अभिव्यक्ति।
   - समकालीन कविता में स्त्री की आवाज़ प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनी।
4. **नाटक और स्त्री विमर्श**
   - **मोहन राकेश** – *आषाढ़ का एक दिन* और *आधे-अधूरे* में स्त्री की जटिल भूमिका, अपूर्ण आकांक्षाएँ और सामाजिक संरचना से टकराव।
   - **असगर वजाहत** – नाटकों में स्त्री के सामाजिक-राजनीतिक संघर्ष का चित्रण।
5. **प्रमुख विमर्श बिंदु**
   - **पितृसत्ता और स्त्री का प्रतिरोध** – साहित्य में स्त्री के प्रतिरोध की आवाज़।
   - **अस्मिता और पहचान** – स्त्री की आत्म-स्वीकृति और समाज से मान्यता की माँग।
   - **शिक्षा और आत्मनिर्भरता** – शिक्षा को स्त्री मुक्ति का आधार माना गया।
   - **देह विमर्श** – स्त्री की देह को वस्तु न मानकर उसकी स्वतंत्रता और अधिकार का प्रश्न।
   - **सामाजिक चेतना** – स्त्री विमर्श से उत्पन्न नए मूल्य और दृष्टिकोण।

समकालीन समाज पर प्रभाव

समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का प्रभाव केवल साहित्यिक धरातल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने समाज की मानसिकता और जीवन-दृष्टि पर भी गहरा असर डाला है। इस प्रभाव को निम्न बिंदुओं में देखा जा सकता है –

1. **सामाजिक चेतना का विस्तार**
   - साहित्य ने स्त्री को केवल 'गृहिणी' की पारंपरिक छवि से मुक्त करके उसे सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय भागीदार के रूप में प्रस्तुत किया।

 Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.02, September: 2025

- मन्नू भण्डारी और चित्रा मुद्गल जैसे लेखकों ने स्त्री के संघर्षों को सामने रखकर समाज को यह सोचने पर विवश किया कि स्त्री भी अपने अधिकारों और अस्तित्व के लिए मुखर हो सकती है।

2. **शिक्षा और आत्मनिर्भरता की चेतना**
   - समकालीन रचनाओं में यह संदेश स्पष्ट है कि शिक्षा और आत्मनिर्भरता के बिना स्त्री अपने अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं कर सकती।
   - उपन्यासों और कहानियों में शिक्षित स्त्रियों की आकांक्षाएँ, नौकरी और करियर की चुनौतियाँ और आत्मसम्मान की खोज बार-बार सामने आती है।
3. **पितृसत्ता को चुनौती**
   - साहित्य ने पितृसत्तात्मक सोच को प्रश्नांकित किया।
   - स्त्रियाँ केवल परिवार और विवाह की परिधि तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे स्वतंत्र व्यक्तित्व और संवेदनशील नागरिक भी हैं—यह चेतना साहित्य द्वारा समाज में प्रसारित हुई।
4. **देह विमर्श और लैंगिक समानता**
   - समकालीन कविता और उपन्यासों में स्त्री देह को वस्तु की तरह देखने की मानसिकता का विरोध किया गया।
   - स्त्री की इच्छा, उसकी स्वायत्तता और उसके निर्णयों का सम्मान करने की दिशा में समाज को प्रेरित किया गया।
5. **राजनीतिक और सांस्कृतिक सहभागिता**
   - स्त्री विमर्श ने राजनीति और संस्कृति दोनों क्षेत्रों में स्त्रियों की बढ़ती भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया।
   - स्त्री को मतदाता, नेता, कार्यकर्ता और कलाकार के रूप में देखने की प्रवृत्ति मजबूत हुई।
6. **नए मूल्य और दृष्टिकोण**
   - परिवार, विवाह, प्रेम और संबंधों की पारंपरिक परिभाषाओं को पुनः परखा गया।
   - स्त्री-पुरुष संबंधों में साझेदारी, संवाद और समानता को नया मूल्य माना जाने लगा।

तुलनात्मक तालिका

क्रमांक	रचनाकार / कृति	मुख्य विमर्श बिंदु	स्त्री की स्थिति / स्वरूप	विश्लेषणात्मक दृष्टि	तुलनात्मक टिप्पणी
1	**मन्नू भण्डारी – *आपका बंटी***	तलाक़, बिखरा परिवार, मातृत्व का द्वंद्व	स्त्री (शकुंतला) असहाय लेकिन संवेदनशील, बच्चों के भविष्य के लिए संघर्षरत	पारिवारिक जीवन में स्त्री के अस्तित्व संकट का चित्रण	यहाँ स्त्री की पीड़ा पारिवारिक बंधनों से जुड़ी है, जबकि अन्य कृतियों में व्यापक सामाजिक संदर्भ उभरते हैं।
2	**मृदुला गर्ग – *कठगुलाब***	देह विमर्श, स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय	नायिका पारंपरिक मान्यताओं से विद्रोह करती है;	स्त्री के निजी जीवन और देह को स्वतंत्र इकाई के रूप में प्रस्तुत	भण्डारी की नायिका परिवार तक सीमित है, जबकि गर्ग की नायिका सामाजिक-

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.02, September: 2025

			अपनी स्वतंत्र पहचान खोजती है		नैतिक बंधनों को चुनौती देती है।
3	**चित्रा मुद्गल – *आवां***	श्रमिक स्त्रियों का संघर्ष, कामकाजी महिला	स्त्री श्रम के माध्यम से अपनी पहचान बनाती है; शोषण का सामना करती है	समाजवादी दृष्टिकोण से स्त्री के आर्थिक योगदान को रेखांकित	गर्ग की नायिका उच्चवर्गीय है, जबकि मुद्गल ने श्रमिक वर्ग की स्त्री की कठोर वास्तविकताओं को प्रस्तुत किया।
4	**उषा प्रियंवदा – *वापसी* व अन्य कहानियाँ**	कामकाजी स्त्री, अकेलापन, संवेदनाएँ	स्त्री अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन खोजती है	मध्यवर्गीय स्त्री के भावनात्मक और सामाजिक द्वंद्व का चित्रण	मुद्गल के श्रमिक वर्ग से भिन्न, प्रियंवदा की नायिकाएँ शिक्षित, शहरी, लेकिन अकेलेपन से जूझती हैं।
5	**अनामिका – *ढोलक* (कविता-संग्रह)**	स्त्री की आवाज़, प्रतिरोध, आत्मसम्मान	स्त्री स्वयं अपनी अभिव्यक्ति करती है; 'स्वर' के रूप में स्थापित	रूपक और प्रतीकों के माध्यम से स्त्री चेतना का विस्तार	कथा और उपन्यास के विपरीत, कविता में स्त्री का स्वर अधिक प्रत्यक्ष और विद्रोही दिखाई देता है।

निष्कर्ष

समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श एक सशक्त धारा के रूप में उभरा है, जिसने स्त्री की अस्मिता, स्वतंत्रता और अधिकारों को केंद्र में रखकर साहित्य को नई दृष्टि दी है। यह विमर्श केवल साहित्यिक प्रवृत्ति न होकर समाज में परिवर्तन का एक उपकरण भी है।

मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, अनामिका, उषा प्रियंवदा जैसे लेखकों ने स्त्री जीवन की जटिलताओं को गहराई से समझा और उनकी रचनाओं ने यह स्पष्ट किया कि स्त्री केवल सहायक या हाशिये की पात्र नहीं है, बल्कि जीवन और समाज की मुख्य धुरी है।

साहित्य ने यह संदेश दिया कि स्त्री के बिना न तो समाज का विकास संभव है और न ही लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना। स्त्री विमर्श ने हिन्दी साहित्य को अधिक मानवीय, संवेदनशील और प्रगतिशील बनाया है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श ने –

- स्त्री को अपने अस्तित्व की पहचान दी,
- उसे आत्मनिर्भरता और स्वाधीनता की राह दिखाई,
- और समाज को एक अधिक न्यायपूर्ण और समानतापूर्ण दिशा में आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी।

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.02, September: 2025

संदर्भ सूची

1. भण्डारी, मन्नू – *आपका बंटी*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. गर्ग, मृदुला – *कठगुलाब*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. मुद्गल, चित्रा – *आवां*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. प्रियंवदा, उषा – *वापसी* (कहानी-संग्रह), भारतीय ज्ञानपीठ।
5. अनामिका – *ढोलक* (काव्य-संग्रह), राजकमल प्रकाशन।
6. शर्मा, कुमुद – *स्त्री-लेखन और विमर्श*, वाणी प्रकाशन।
7. राकेश, मोहन – *आधे-अधूरे*, राजकमल प्रकाशन।
8. वजाहत, असगर – *जिन लाहौर नहीं वेख्या*, नाट्य रचनाएँ।
9. ठाकुर, गौतम – *समकालीन हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श*, साहित्य अकादमी।
10. अग्रवाल, रमेश – *भारतीय नारी विमर्श की दिशा*, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
11. गुप्ता, निर्मला – "समकालीन कथा साहित्य में स्त्री विमर्श", *हंस पत्रिका*, विशेषांक।
12. मिश्रा, मीनाक्षी – *नारीवाद और हिन्दी साहित्य*, राजकमल प्रकाशन।

Copyright @ 2025 Author